ISSN: 2456–5474 RNI No.UPBIL/2016/68367 Vol.-5* Issue-12* January- 2021
Innovation The Research Concept

राजस्थान में खनन के आर्थिक प्रभाव

Economic Impact of Mining in Rajasthan

Paper Submission: 15/01/2021, Date of Acceptance: 26/01/2021, Date of Publication: 27/01/2021

धर्मेन्द्र पाटीदार
सहायक आचार्य,
भूगोल विभाग,
राजकीय महाविद्यालय,
सागवाड़ा, डूँगरपुर,
राजस्थान, भारत

सारांश

राजस्थान को खनिजों का अजायबघर भी कहा जाता है। जास्पर, वोलस्टोनाइट एवं जस्ता के उत्पादन में राज्य का एकाधिकार है। एस्बेस्टस, फ्लोराइट, जिप्सम, मार्बल, ऑकर, रॉकफास्फेट, बॉलक्ले व कैल्साइट खनिजों का 90 प्रतिशत से भी अधिक उत्पादन अकेले राजस्थान में होता है। राजस्थान सरकार के खान एवं भूविज्ञान विभाग से प्राप्त आंकड़ों के अनुसार राज्य में वर्ष 2011–12 में प्रमुख एवं गौण, दोनों प्रकार के खनिजों का कुल उत्पादन 332469 हजार टन हुआ, जिससे 297441 लोगों को रोजगार तथा 22765309 हजार रूपये राजस्व प्राप्ति हुई। खनन से एक ओर जहॉ खनन कंपनी को लाभ एवं लोगों को रोजगार प्राप्त होता है वहीं दूसरी ओर सरकार को आय प्राप्त होती है। खनन के इसी आर्थिक प्रभाव को प्रस्तुत शोध पत्र में वर्णित किया है।

Rajasthan is also known as a museum of minerals. The state has a monopoly in the production of Jasper, Wollastonite and Zink. Asbestos, Fluorite, Gypsum, Marble, Rock Phosphate and Calcite minerals are produced in Rajasthan alone more than 90 percent. According to data receiver from the department of Mines and Geology of the Government of Rajasthan, the total production of both major and minor minerals in the state in 2011-12 was 332469 thousand tones, providing employment to 297441 people and revenue of Rs 22765309 thousand. On one hand, the mining company gets benefits and people get employment on the other hand, on the other hand the Government gets income. The ecomomic impact of mining is described in this research paper.

मुख्य शब्द : खनन, राजस्व, आर्थिक, रोजगार, संसाधन।
Mining, Revenue, Economic, Employment , Resources.

प्रस्तावना

खनन भारत की एक प्रमुख आर्थिक गतिविधी है जिसका देश के सकल घरेलू उत्पाद में महत्त्वपूर्ण योगदान है। भारत द्वारा अनेक खनिजों का उत्पादन एवं निर्यात किया जाता है जो इसकी भौगोलिक सीमा में प्रचुर मात्रा में पाये जाते है। इसमें कोई संदेह नही है कि खनन क्षेत्र का आर्थिक विकास में महत्त्वपूर्ण योगदान है, परन्तु खनिजों को निकालने एवं उपयोगी बनाने के लिए जिन रासायनिक प्रक्रियाओं को अपनाया जाता है उनके मानव जीवन पर प्रभाव नकारात्मक होते है।

राजस्थान में भी अनेक प्रकार के खनिज पाये जाते है जिनमें तांबा, लौह–अयस्क, सीसा–जस्ता, एस्बेस्टस, ड़ोलोमाइट, जिप्सम, लिग्नाइट, लाइमस्टोन, क्वार्ट्ज, फेल्सपार, अभ्रक, रॉक–फॉस्फेट, सॉपस्टोन, संगमरमर प्रमुख है। खनिजों की इसी विविधता के कारण राजस्थान को खनिजों का अजायबघर भी कहा जाता है। खनिजों के सम्बन्ध में भारत में राजस्थान का महत्व इस बात से भी स्पष्ट हो जाता है कि जास्पर, वोलस्टोनाइट एवं जस्ता के उत्पादन मे राजस्थान का एकाधिकार है। साथ ही एस्बेस्टस, फ्लोराइट, जिप्सम, मार्बल, ऑकर, रॉकफास्फेट, बॉलक्ले व कैल्साइट खनिजों का अधिकांश उत्पादन अकेले राजस्थान में होता है। साथ ही खनिज राजस्थान के सकल घरेलू उत्पाद में भी महत्त्वपूर्ण योगदान रखते है।

अध्ययन का उद्देश्य एवं शोध प्रविधि

राजस्थान खनिजों की दृष्टि से देश के अग्रणी राज्यों में से एक है। खनन से न सिर्फ राज्य के लोगों को रोजगार मिलता है वरन् सरकार को राजस्व भी प्राप्त होता है। अतः प्रस्तुत अध्ययन का मुख्य उद्देश्य राजस्थान में

खनन के रोजगार एवं आय पर प्रभाव का अध्ययन करना है। इस उद्देश्य की पूर्ति के लिए निम्नलिखित शोध प्रविधि अपनाई गयी है।

प्रस्तुत अध्ययन मुख्यतः द्वितीयक समंकों पर आधारित है। अध्ययन में प्रयुक्त किये गए द्वितीयक समंक विभिन्न सरकारी प्रतिवेदनों तथा भारत एवं राजस्थान सरकार के खनिज विभागों से प्राप्त किये गए है। खनन से रोजगार एवं आय वृद्धि का अध्ययन करने के लिये सारणीबद्ध समंकों से वार्षिक वृद्धि दर की गणना एवं विश्लेषण किया गया है। इस विश्लेषण को नीचे बताया जा रहा है।

विश्लेषण

खनन के रोजगार एवं आय पर प्रभावों का विश्लेषण तीन भागों में किया गया है। पहले भाग में राजस्थान में खनिज उत्पादन एवं दूसरे भाग में रोजगार का विश्लेषण किया गया जबकि अंतिम भाग में खनन के सरकार की आय पर पड़ने वाले प्रभावों को बताया गया है।

भागः 1. राजस्थान में खनिजों का उत्पादन एवं वृद्धि

राजस्थान में तांबा, लौह–अयस्क, सीसा–जस्ता, एस्बेस्टस, ड़ोलोमाइट, जिप्सम, लिग्नाइट, लाइमस्टोन, क्वार्ट्ज, फेल्सपार, अभ्रक, रॉक–फॉस्फेट, सॉपस्टोन प्रमुख खनिज एवं ग्रेनाइट, संगमरमर, कंकड़–बजरी, बेंटोनाइट गौण खनिज पाये जाते है। इन खनिजों के उत्पादन, रोजगार एवं राजस्व प्राप्ति को सारणी 1 में बताया गया है।

सारणी– 1: राजस्थान के प्रमुख खनिजों के अन्तर्गत क्षेत्रफल एवं उत्पादन

वर्ष	क्षेत्रफल (हैक्टर)	क्षेत्रफल की वृद्धि (प्रतिशत)	उत्पादन (हजार टन)	उत्पादन की वृद्धि (प्रतिशत)
1995-96	159311.89	-	21430.00	-
1996-97	158795.13	-0.32	22018.00	2.74
1997-98	156507.58	-1.44	32399.40	47.15
1998-99	151086.44	-3.46	75691.75	133.62
1999-00	146974.60	-2.72	30317.00	-59.95
2000-01	142019.04	-3.37	30214.00	-0.34
2001-02	131646.28	-7.30	79669.04	163.68
2002-03	126857.51	-3.64	36303.08	-54.43
2003-04	110361.97	-13.00	38183.14	5.18
2004-05	99240.54	-10.08	43883.49	14.93
2005-06	92437.21	-6.86	38742.83	-11.71
2006-07	92948.65	0.55	44503.00	14.87
2007-08	89916.35	-3.26	49116.02	10.37
2008-09	87695.76	-2.47	60132.39	22.43
2009-10	88719.76	1.17	69702.36	15.91
2010-11	97487.20	9.88	69735.00	0.05
2011-12	95331.05	-2.21	77638.42	11.33

स्त्रोत : खान एवं भूविज्ञान विभाग राजस्थान, उदयपुर।

भागः 2. राजस्थान में खनन से रोजगार

राज्य में रोजगार के अनेक संसाधन है। इनमें खनन भी एक प्रमुख संसाधन है जो कई तरह से लोगों को रोजगार उपलब्ध करता है। खनन प्रक्रिया में श्रमिकों से लेकर खनिजों को कारखानों तक पहुंचाने में कई लोगों को प्रत्यक्ष अथवा अप्रत्यक्ष रूप से रोजगार प्राप्त होता है। राजस्थान में खनन प्रक्रिया से कई लोगों को रोजगार प्राप्त हो रहा है। राज्य में प्रमुख तथा गौण खनिजों से प्राप्त रोजगार की स्थिति को सारणी 2 में दर्शाया गया है।

सारणी– 2: राजस्थान के प्रमुख खनिजों के अन्तर्गत पट्टे एवं रोजगार

वर्ष	पट्टे (संख्या)	पट्टे की वृद्धि (प्रतिशत)	रोजगार (संख्या)	रोजगार की वृद्धि (प्रतिशत)
1995-96	1300	.	51342	.
1996-97	1305	0.38	39855	-22.37
1997-98	1310	0.38	38690	-2.92
1998-99	1305	-0.38	32064	-17.13
1999-00	1293	-0.92	31082	-3.06

2000-01	1262	-2.40	28394	-8.65
2001-02	1266	0.32	27578	-2.87
2002-03	1262	-0.32	34511	25.14
2003-04	1206	-4.44	29265	-15.20
2004-05	1205	-0.08	28941	-1.11
2005-06	1361	12.95	29992	3.63
2006-07	1558	14.47	27035	-9.86
2007-08	1941	24.58	29155	7.84
2008-09	2360	21.59	38416	31.76
2009-10	2574	9.07	37019	-3.64
2010-11	2713	5.40	37063	0.12
2011-12	2874	5.93	40406	9.02

स्त्रोत : खान एवं भूविज्ञान विभाग राजस्थान, उदयपुर।

भागः 3. राजस्थान सरकार को खनन से राजस्व प्राप्ति

सरकार के राजस्व प्राप्ति के कई स्त्रोत होते है। इनमें खनन भी एक स्त्रोत है जिससे कर एवं गैर–कर के रूप में सरकार को राजस्व की प्राप्ति होती है। राजस्थान में भी खनन राज्य सरकार की आय का एक प्रमुख स्त्रोत है। खनन से राज्य को हो रही राजस्व प्राप्ति की स्थिति को सारणी 3 में देखा जा सकता है। खनन से सरकार को राजस्व प्राप्ति की स्थिति को प्रमुख तथा गौण खनिजों के रूप में सारणी में प्रदर्शित किया गया है।

सारणी– 3: राजस्थान के प्रमुख खनिजों से राजस्व प्राप्ति

वर्ष	उत्पादन (हजार टन)	राजस्व (हजार रूपये)	राजस्व की वृद्धि (प्रतिशत)
1995-96	21430.00	812500.00	-
1996-97	22018.00	1182925.88	45.59
1997-98	32399.40	1437074.92	21.48
1998-99	75691.75	1533414.97	6.70
1999-00	30317.00	1813076.54	18.24
2000-01	30214.00	1873513.42	3.33
2001-02	79669.04	2082240.10	11.14
2002-03	36303.08	2254995.85	8.30
2003-04	38183.14	2569869.40	13.96
2004-05	43883.49	3407531.75	32.60
2005-06	38742.83	3530835.75	3.62
2006-07	44503.00	8130334.87	130.27
2007-08	49116.02	7658456.06	-5.80
2008-09	60132.39	6724814.53	-12.19
2009-10	69702.36	9972827.08	48.30
2010-11	69735.00	11980719.80	20.13
2011-12	77638.42	13379718.86	11.68

स्त्रोत : खान एवं भूविज्ञान विभाग राजस्थान, उदयपुर।

निष्कर्ष एवं सुझाव

खनन के प्रभावों पर एक दृष्टि डालने पर यह पाया गया है कि राजस्थान की अर्थव्यवस्था में खनन विशेषकर रोजगार सृजन एवं सरकार को प्राप्त आय में अपना विशेष महत्व रखता है। अध्ययन अवधि में राज्य में खनिजों के उत्पादन से न सिर्फ लोगों को रोजगार उपलब्ध हुआ है वरन् सरकार को प्राप्त होने वाली आय में भी वृद्धि हुई है। इस आधार पर यह कह सकते है कि राज्य की आवश्यकता के इन अनवीकरणीय खनिजों का मितव्यता एवं समुचित ढ़ंग से वैज्ञानिक तकनीक द्वारा दोहन किया जाना चाहिए ताकि भावी पीढ़ी की आवश्यकताओं को पूर्ण किया जा सके एवं सतत् विकास का मार्ग प्रशस्त हो सके।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. *Navin, M.S. (2012), "Environmental Impact of Soil and Sand Mining : A Review."*
2. *Parmar, L.L. (1998), "Mining and Environment: Study in Context of Banswara District", unpublished PhD thesis, 1998, Mohanlal Sukhadia University, Udaipur (Rajasthan).*
3. *Patel, L.R. (2013), "Minerals Industries and Environs" book published by Signature Books International Delhi (India).*
4. *Patnaik, L.N. (1990), "Environmental Impact of Industrial and Mining Activities", Ashish Publishing House, New Delhi.*
5. *Vernet, J.P. (1991), "Heavy Metals in the Environment", Elsevier Publication, London.*
6. *Website : http://www.dmg-raj.org*